आचार्य मम्मट के काव्यप्रयोजन, समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. बदलू राम

प्रोफेसर संस्कृत

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर (राज0)

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 3, May-June 2023

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

प्रस्तावना- प्राचीन काल से ही भारत के मनीषियों ने काव्य या साहित्य के प्रयोजन पर विचार किया है। "यहाँ कला कला के लिये (Arts for Art's sake) की बात को नहीं माना गया और न आधुनिक उपयोगितावाद को ही काव्यभूमि में प्रतिष्ठित किया गया है अपितु काव्य के दृष्ट तथा अदृष्ट दोनों प्रकार के प्रयोजन माने गये हैं। नाट्य या काव्य के प्रयोजन पर सर्वप्रथम भरतमुनि ने (तृतीय शताब्दी) में विचार किया था । उनका कथन है –

वेदविद्येतिहासानामाख्यानपरिकल्पनम् विनोदजननं लोके नाटयमेतद् भविष्यति ।

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् ।

विश्रामजननं लोके नाटयमेतद् भविष्यति ।।

अर्थात नाट्य कला का प्रयोजन है- लोक का मनोरंजन एवं शोकपीडित तथा परिश्रान्त जनों को विश्रान्ति प्रदान करना । भरत मुनि के पश्चात् ज्यों ज्यों साहित्यिक विवेचना का विकास होने लगा त्यों त्यों काव्य के प्रयोजन का भी विशद विवेचन किया गया। आलकांरिक आचार्य भामह के अनुसार –

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ।।

अर्थात् सत्काव्य का अनुशीलन (1) धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष नामक पुरुषार्थ-चतुष्टय - चतुष्टय एवं कलाओं में निपुणता (2) यशः प्राप्ति तथा (3) प्रीति का कारण है ।

आचार्य भामह के पश्चात् रीतिवादी आचार्य वामन ने काव्य के प्रयोजन पर विचार करते हुए लिखा-

काव्यं सत् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात् (काव्यालंकारसूत्रवृत्ति) [1]

अर्थात् सत्काव्य के दो प्रयोजन हैं1. दृष्ट, 2. अदृष्ट । दृष्ट प्रयोजन है प्रीति और अदृष्ट प्रयोजन है कीर्ति । टीकाकारों के अनुसार यहाँ पर दो प्रकार की प्रीति विवक्षित है एक तो काव्य-श्रवण के अनन्तर सहृदयों के हृदय में होने वाला आनन्द और दूसरी इष्टप्राप्ति तथा अनिष्टपरिहार से उत्पन्न होने वाला सुख । यहाँ कीर्ति को स्वर्ग का साधन माना गया है। " कीर्ति स्वर्गफलामाहुरासंसारं विपश्चितः ।" इसी से कीर्ति को अदृष्ट प्रयोजन कहा गया है ।

तदन्नतर ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्धन ने भी 'प्रीति' को ही काव्य का प्रयोजन बतलाया— तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम् (ध्वन्यालोक : 1.1) किन्तु ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्धन तथा आचार्य अभिनवगुप्त की 'प्रीति' की व्याख्या रीतिवादी आचार्यों की व्याख्या से भिन्न है। यह तो उस विलक्षण आनन्द का नाम है जो सहृदयों के हृदय की अनुभूति का विषय है, अथवा रसवादी आचार्य जिसे रसास्वादन या रसानुभूति कहते हैं। तभी तो आचार्य भोजराज

की "कीर्ति प्रीतिं च विन्दन्ति" (सरस्वती कण्ठाभरण 1.4) इस उक्ति की व्याख्या करते हुए व्याख्याकार रत्नेश्वर ने 'प्रीति' का इस प्रकार विवेचन किया है "प्रीतिः सम्पूर्णकाव्यार्थसमुत्थः आनन्दः" ध्वनिवादियों

द्वारा प्रतिपादित काव्य के इस मुख्य प्रयोजन को बाद के आचार्यों ने अपना आदर्श वाक्य सा बना लिया। नवीन वक्रोक्तिवाद का उद्घाटन करते हुए भी आचार्य कुन्तक ने काव्य का यही प्रयोजन बतलाया –

धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः ।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाल्हादकारकः ।[3]

आचार्य मम्मट ने काव्य - प्रयोजन विषयक विभिन्नवादों को समन्वित रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। अपने से पूर्व समस्त आचार्यों (अलकारवादी, रीतिवादी ध्वनिवादी, वक्रोक्तिवादी तथा रसवादी) के मत का ही समन्वय उन्होंने नहीं किया अपितु काव्य को केवल कला का चमत्कार मानने वालों अथवा केवल मनोविनोद का साधन समझने वालों अथवा अर्थशास्त्र के उपयोगितावाद की कसौटी पर कसनेवालों के समक्ष भी एक 'समन्वयदृष्टि' प्रस्तुत कर दी एवं "काव्यं यशसे" इत्यादि कारिका में काव्य के 6 प्रयोजनों का निरूपण किया ।

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
4 सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे । [4]

अनुवाद इस ग्रंथ में (इह) जो प्रतिपाद्य विषय (काव्य) है वह प्रयोजन सहित है यह (काव्यं यशसे
आदि कारिका में) बतलाते हैं -
काव्य (रचना) यश प्राप्ति के लिये, धन-अर्जन के लिये, व्यवहार - ज्ञान के लिये, अमंगल के विनाश या निवारण के लिये (शिवात् मंगलात् इतरद् अमंगलं तस्य क्षतये), तुरन्त ही परमानन्द (की प्राप्ति) के लिए (परा उत्कृष्टा निवृत्तिः आनन्दः तस्मै) तथा प्रियतमा के समान उपदेश देने के लिये (होता है) ।
आचार्य मम्मट ने काव्य के प्रयोजनों पर विचार किया है। उसके अनुसार काव्य के 6 प्रयोजन हैं –

1. काव्य यशसे — काव्य यश के लिये होता है । काव्य निर्माण से कवि की कीर्ति का प्रसार होता है । कविकुलगुरु कालिदास ने काव्य द्वारा ही कीर्ति प्राप्त की थी। इसी प्रकार दण्डी, भारवि तथा बाण आदि ने काव्य द्वारा स्वकीर्ति का प्रसार किया था ।

2. अर्थकृते – काव्य - प्राप्ति के लिये होता है । कविजन काव्य रचना करके धनोपार्जन करते रहे हैं। भोजप्रबंध में ऐसी अनेक कथाएँ संकलित हैं। हिन्दी साहित्य का रीति-युग भी इसके लिए प्रसिद्ध ही है । यह भी लोक - प्रसिद्धि है कि भावक नामक कवि ने महाराज हर्ष के नाम से 'रत्नावली नाटिका लिखी और पुष्कल धन - राशि प्राप्त की । वस्तुतः मध्य युग में अर्थ - प्राप्ति काव्य का विशेष प्रयोजन हो गया था ।

3. व्यावहारविदे - काव्य व्यवहार ज्ञान के लिये होता है। रामायणादि महाकाव्यों के अनुशीलन से सहृदयों को राजा आदि का ही नहीं अपितु मन्त्री, गुरु आदि तथा पिता-पुत्र, माता - पुत्र और भाई-भाई आदि के उचित आचार का ज्ञान होता है । राजा आदि के व्यवहारों का काव्य द्वारा सहज में ही ज्ञान होना संभव है, इतिहास आदि के द्वारा इतना सुलभ नहीं ।

4. शिवेतरक्षतये — शिव का अर्थ है, कल्याण या मंगल । शिव से भिन्न (इतर) शिवेतर = अमंगल | काव्य अमंगल निवारण के लिये होता है। यहाँ मम्मट ने मयूर कवि की कथा की ओर संकेत किया है। यह कवि हर्षवर्द्धन की

राजसभा का रत्न था। परम्परा (मेरूतुंग की प्रबन्धचिन्तामणि आदि) के अनुसार महाकवि बाण इसका भगिनीपति एवं मित्र था। दैवात् बाण की पत्नी के शाप से इसे कुष्ठ रोग हो गया । कुष्ठरोगाक्रान्त मयूर कवि ने सूर्य भगवान् की स्तुति में शत श्लोकों का एक काव्य रचा। उससे प्रसन्न होकर सूर्य ने उसके शरीर को नीरोग कर दिया । मयूर कवि का काव्य 'मयूरशतकम्' या 'सूर्यशतकम्' नाम से प्रसिद्ध है ।

5. सद्यः परनिवृतये - काव्य तुरन्त (पढ़ने के साथ) ही आनन्द का अनुभव कराने के लिए है । ग्रन्थकार है। यहाँ पर एक विलक्षण आनन्द को ही परनिवृति अर्थात् उत्कृष्ट आनन्द कहा गया है। आचार्य मम्मट के अनुसार इस अलौकिक आनन्द की अनुभूति ही काव्य का मुख्य प्रयोजन है । यह ऐसा प्रयोजन है जो अन्य समस्त प्रयोजनों में शीर्षण्य है।

6. कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे - काव्य प्रियतमा के समान उपदेश प्रदान करने के लिये है । ग्रन्थकार ने प्रभुसम्मित 'दपदेशं करोति' इस अवतरण में इसकी व्याख्या की है। अभिप्राय यह है कि किसी कार्य को करने के लिये प्रायः (क) प्रभुतुल्य, (ख) मित्रतुल्य तथा (ग) कान्तातुल्य उपदेशों से बाह्य प्रेरणा मिला करती है ।

जिस प्रकार कोई प्रियतमा सरसता के साथ अपने पति को अपनी बात सुनने के लिए अभिमुख करके किसी कार्य के लिए प्रेरणा देती है, उसी प्रकार काव्य भी श्रोता को रसमग्न करके जीवनोपयोगी शिक्षा की ओर संकेत कर देता है । अतः काव्य का उपदेश कान्ता - सम्मित उपदेश है ।

काव्य का उपदेश कान्ता के मधुर वचनों के समान सरस है, उसमें सौन्दर्य है, हृदयाग्राह्यता है, उसमें 'सत्यं शिवं सुन्दरं का सांजस्य है ।

आचार्य मम्मट द्वारा प्रतिपादित काव्य के प्रयोजन अत्यन्त व्यापक हैं । इनमें उत्तम, मध्यम तथा अधम सभी प्रकार के काव्य के प्रयोजनों का समावेश हो जाता है । मम्मट ने काव्य का मुख्य (पारमार्थिक) प्रयोजन आनन्दानुभूति (परनिवृत्ति) को स्वीकार किया है। किन्तु साहित्य तो जीवन की व्याख्या है तथा उसे जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता, अतएव सरसोपदेश भी काव्य का एक आवश्यक प्रयोजन माना जाता है तथा आचार्य मम्मट ने इसे मौलिभूत प्रयोजन के साथ समन्वित कर दिया है। उन्होंने रस - योजना में तत्पर काव्य के उपदेश के रूप में इसका निरूपण किया है। इस प्रकार मम्मट का दृष्टिकोण पाश्चात्य समीक्षकों के साथ एक अद्भुत साम्य रख है ।

To teach, to please, there are the poets aim, or at once to profit and to amuse. Horace- Ars poetica. (म. गंगानाथ झा द्वारा उद्धृत)

आचार्य मम्मट ने प्रायः सभी प्राचीन मतों का समन्वय कर दिया है। उनके काव्य - प्रयोजनों के अन्तर्गत कीर्ति और प्रीति ही नहीं, कर्त्तव्याकर्त्तव्य ज्ञान के लिये सरसोपदेश भी है। साथ ही उन्होंने यशः प्राप्ति, धन-लाभ और व्यावहारिक -ज्ञान जैसे लौकिक प्रयोजनों को भी नहीं भुलाया है और अमंगल - निवारण के धार्मिक दृष्टिकोण को भी ध्यान में रखा है। काव्य सम्बंधी आधुनिक दृष्टिकोण के विवेचन में भी मम्मट का काव्य - प्रयोजन विचार महत्वपूर्ण योग दे सकता है।

संदर्भ सूची

1. काव्यालंकार सूत्रवृत्ति ((1.1.5)
2. ध्वन्यालोक (1.1)

3. वक्रोक्तिजीवितम् 1.4

4 काव्यप्रकाश (1.2)